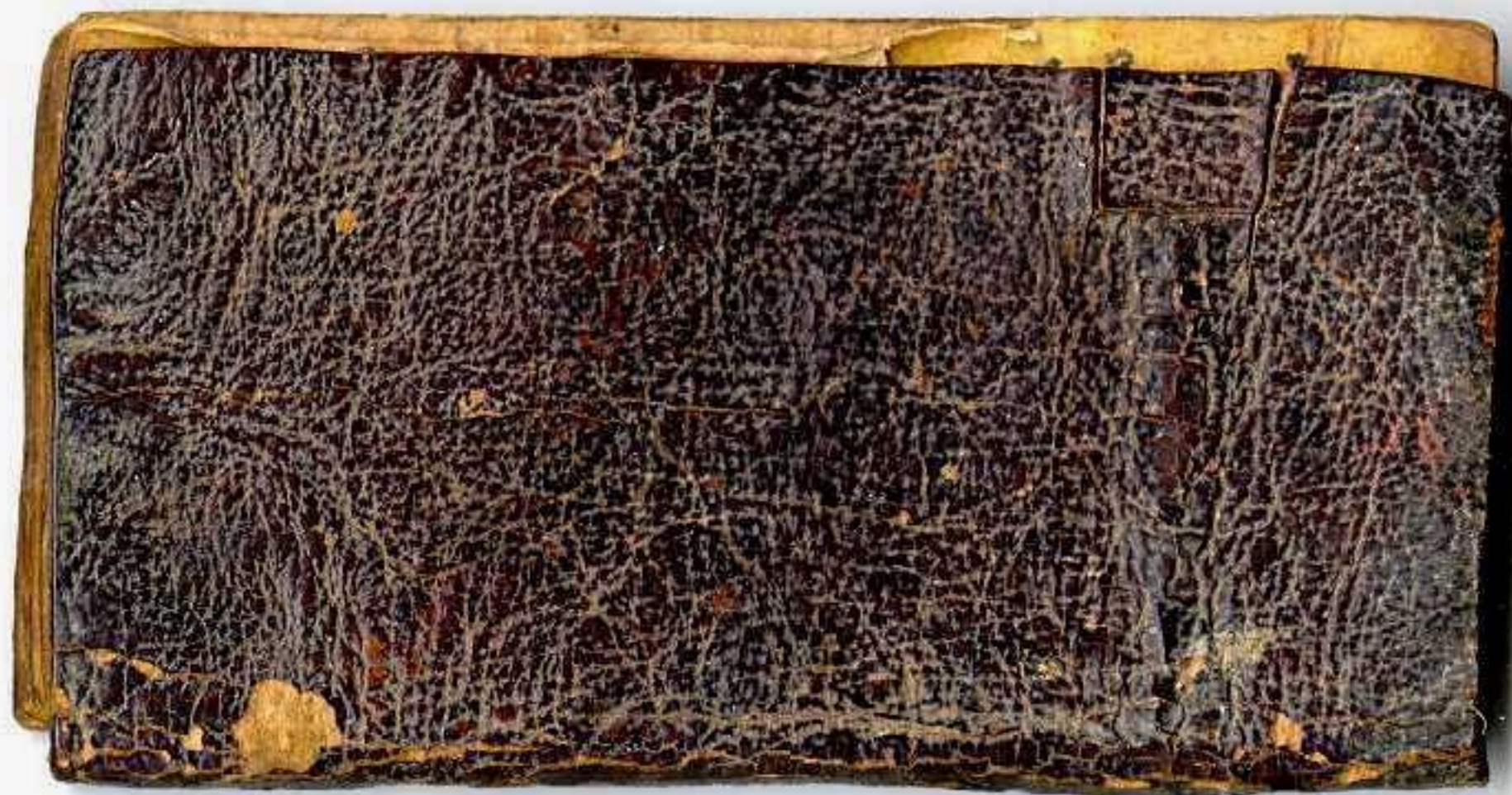




६२ लिं जायेन जुल मातीण्ड मौरव
५५

ASHA ARCHIVES

सुमुखं संयुतं चैव वित्तं तं विस्तृतं स्तथा ॥ द्विमुखं
त्रिमुखं चैव चतुः ॥ यवमुखं स्तथा ॥ यण्मुखो
भोमुखं चैव व्यापकां जलिकं तथा ॥ शकटयम
पाशं च ग्राहितं दोन्मुखोन्मुखं ॥ पलवं मुष्टिकं

3299

चैव मत्स्यकूर्मी वराहकोसिहाक्रांतं महाक्रां
तं मुद्गलयस्त्रवं तथा ॥ एतामुद्रानजानातिगा
यशानिस्कलं भवे ॥ ॥ सुरभिर्ज्ञानयोनिं
च मत्स्यकूर्मी धर्पकजं ॥ लिंगनिर्घोरा मुद्रा च
जयांते च प्रदर्शये ॥ ॥

अथ यागयायू ॥ सौ हृदयादि ॥ चन्दना
कृतयायू ॥ मत्स्यमण्डलगतयायू ॥ ३०
मौलीस्वाहायायू ॥ ३१ ॥ ह्रस्वगुणन ॥
वैधनमूला ॥ अथानि ॥ नानुय
दिग्वन्धन ॥ ॥ यागसूत्राय नमः ॥

कगृहीत्वा ककुयमण्डलगतगुडिका ॥ ३२
धन ॥ जीर्णलिंग ॥ ग्रीहृदि ॥ अथ ककु ॥ शैल
ट ॥ अथ यकान्तविलाम ॥ ॥ जातमयूजा ॥
अथ चन्दनयायू ॥ अथ अकृतयायू ॥ ग्रीहृदि ॥ अथ
अथ माहिनीयायू ॥ अथ यययायू ॥ ॥ गुनतय

ॐ॥ उँ स्वाहा श्रीयत्रमशुनं श्रीयाइका नव्याया
मिश्र॥ उवं॥ यत्रायत्र॥ यत्रमंष्ट्री॥ दिवाद्य॥ मि
श्राद्य॥ मानवोद्य॥ • ॥ गिलगिरया पुरलि॥
उँ कात्रादिगुनूयद॥ एनेदवीमूस्थायामधु
लन्य॥ एन॥ इनयागंगरथेव॥ उँ यूषायायू

उँ वलिगृह्णस्वाहा॥ इत्यंयोगं॥ • ॥ ततः॥ य
त्रवलि॥ उँ अ॥ क॥ श्री॥ क्री॥ क॥ ल॥ यू॥ ज॥ व॥ इ॥ क॥ ना॥ था॥
य॥ व॥ लि॥ गृ॥ ह्ण॥ स्वा॥ हा॥ उँ व॥ उँ अ॥ क॥ क्री॥ क॥ इ॥ कः॥
क्री॥ क॥ ग॥ उँ अ॥ यौ॥ सु॥ र्व॥ या॥ गि॥ नी॥ था॥ उँ अ॥ कु॥ लि॥
दि॥ वा॥ मू॥ धु॥ ये॥ उँ अ॥ गं॥ गौ॥ गू॥ ग॥ इ॥ लो॥ क॥ ल॥ ग॥ र॥ ठे॥

शुनाय ॥ गऊनी दशुःयालि काय गऊमू
दा ॥ विन्दु रय्यलं ॥ जेऊनमः श्रीनाथाय ॥ जे
ऊसिद्धिनाथाय ॥ जेऊनमः कूऊगनाथाय
झूयायू ॥ ० ॥ देवतावाहनं ॥ श्रीसम्बला ॥
० ॥ आदिदेवयूजन ॥ जेऊनमः जेऊनमः जेऊनमः

आदिदेव श्रीयायू ॥ बलि ॥ जेऊनमः सनाय
२ ॥ जेऊनमः ३ ॥ कूऊगनाथाय २ ॥ यायू ॥ बलि
जेऊनमः सनाय २ ॥ जेऊनमः श्रीकूलयूगवद
कनाथाययायू ॥ बलि ॥ जेऊनमः सनायया
यू ॥ जेऊनमः श्रीगूग ॥ श्रीकूलग ॥ ० ॥ देवनाथया

यू॥ वलि॥ दन्द॥ तर्जनी॥ गड॥ मूडा॥ ॥ ५ ॥ त
 ना॥ शि॥ शु॥ द्वि॥ यू॥ जन॥ ॥ वं॥ य॥ आ॥ स॥ ना॥ थ॥ या॥ यू॥ ॥
 ॥ जं॥ ख॥ गु॥ न॥ र॥ श्री॥ न॥ न॥ द॥ व॥ या॥ यू॥ ॥ जं॥ य॥ न॥
 म॥ गु॥ न॥ श्री॥ व॥ र्ण॥ न॥ न॥ द॥ व॥ या॥ यू॥ ॥ जं॥ य॥ न॥ म॥ दू॥
 गु॥ न॥ श्री॥ मि॥ त॥ न॥ न॥ द॥ व॥ या॥ यू॥ ॥ जं॥ यं॥ ज॥ लि॥ ॥ जं॥

जं॥ मू॥ श्री॥ शि॥ शु॥ द्वि॥ र॥ दान॥ क॥ श्री॥ या॥ यू॥ ॥ वलि॥ ॥
 (ध॥ मू॥ न॥ मू॥ डा॥ ॥ ० ॥ त॥ त॥ न॥ वा॥ त्या॥ गु॥ न॥ यू॥ जा॥ ॥
 न्या॥ यू॥ स॥ ॥ अ॥ मि॥ क॥ न॥ द॥ ॥ जं॥ जं॥ ख॥ श्री॥ न॥ वा॥ र्ण॥
 क॥ क॥ ट॥ म॥ ल॥ स॥ ॥ क॥ गं॥ ज॥ लि॥ ॥ वा॥ म॥ द॥ व॥ अ॥ म॥ य॥
 शा॥ गि॥ तं॥ ॥ उ॥ र्ण॥ क॥ न॥ द॥ स॥ ॥ म॥ र्ख॥ ॥ श्री॥ क॥ द्वि॥ का॥

दवा दवतायेश्च । हृदि । इन्द्रं बीजाय । खं मु
 क्तं गङ्गातयश्च । धूम्रं कीलकायश्च । कुतोऽ
 लि । ममनवात्माकं । पुष्टिं कादिमकलमनु
 द्वियूर्ध्वधर्माथ कामभाकार्यजयविनिधा
 गः । जं जुं जं गुह्यरुद्रं । जिं जं जं गुह्याख्या

[illegible]

ॐ ॐ वं नालो यायू ॥ ॐ ॐ नै गु ध्र यायू ॥ ॐ ॐ यं
 जानो यायू ॥ ॐ ॐ ॐ या द द्र य यायू ॥ ॐ ॐ
 तत्रा स नै ॥ ॐ ॐ य द्वा स ना य यायू ॥ ॐ ॐ य
 स ना य यायू ॥ ॐ ॐ नै ॥ ॐ ॐ य द्वा स न ग व स्य
 व द नं कुं रि ता व नै ॥ ख व र्णु च म हा दी यं सर्व
 व १

ल क ष सं यु तं ॥ ख व र्णु चूर्व व क रु द कि र ण क
 यु र्ण रि तं ॥ उ र्ण य पी त व र्णु सा ७ न दू र्ण न क
 न रि तं ॥ न क स्य द कि र ण धू मं र ष त मू ल न
 न म व र ॥ न दू र्ण यी त व र्णु यी त स्य क मू द कि
 र ॥ न क मू ल न मि ल्या क न दू र्ण र ष त मू ल
 च २

मं॥ जूष्णदण्डजं दंर्वकर्वधालालहवि
गं॥ स्वप्नरुटकधनंदवंधिगुलंमं॥ कं॥ त
था॥ सृष्टं कर्मदंर्वं॥ गुष्टं॥ उमनूखदोगय
वच॥ वानंधनूसंयुक्तं॥ दवष्टुष्टुगुल
रत्नरिगं॥ च॥ कुर्वेवगदायाविबिबदा

यदुक्तं॥ कायविन्दुधनंदवंनानातका
नमं॥ वि॥ तं॥ नर्वयितं॥ र्वद्वं॥ सनं॥ स
खसंस्थितं॥ नर्वनूयंनवात्मानं॥ मं॥ गुलं॥ गुलं॥ मं॥
लं॥ था॥ यतनयुक्तात्मा॥ क्रियसिद्धांतिमानव
१॥ था॥ नयुक्तं॥ १॥ नावाहनादिमुद्रा॥ याद्यादि

श्रीं मुं कौं मूं ज्ञानन्दगकिरेववानन्दवीमि
यतयमूं श्रीं श्रीकृष्णनाथयस्वगकिमदि
तायया मूं यज॥ वलि शिगूलया निमूडा॥
तगठमा हका जंज हं नामनाय॥ जर्व वृमः
मयूनगनूः नीलयेतः गजः यं गः

श्रीं ह॥ श्रीं जलि॥ जंज ज्ञानज्मायेवनदवि
मलं मवृद्धालीविज्जमायू॥ जर्व कं चंटी रं रं रं
नं॥ वलि॥ यद्यः शिगूल गकिः गंख कोल क्य
काय खमूडा॥ ॥ दववामवृद्धान्यादि॥
तगाग्रवधुयूजन जंज यद्यासनाययू॥ जर्व

सिंहः महिषः शुरुः निशुरुः ॥ अंजलिः ॥ ॐ अंजं
नाजयदं कुंजग्रवः शुनिष्मईनी हं हं सदान
करत्वांनो ॥ ॐ सः मृत्पूहननमः ॥ स्वाहायायू
ॐ नमः ॥ श्रीजीवेः शुग्रयेनमः ॥ श्रीजीयायू
॥ ॐ सः उग्रवः शुग्रयेयायू ॥ वलिमूडा ॥

गगनः नृपुत्रः शुदिः ॥ रवीदगमः ॥ ० ॥ गगनः वाग
श्वनिः ॥ ॐ अयः द्यासनायः ॥ ॐ यो अलिः ॥ ॐ अ
त्रिकिटिः त्रिकिटिः कूटकूशुवाः गगनी वृद्धमहं
गानिकावित्रयायू ॥ वलिमूडा ॥ ० ॥ गगनः कु
मः ॥ न्यासः ॥ हं हं दिः ॥ आसनः ॥ ॐ अंजं

धात्रेण कृय २ । उवंः अनन्तः स्कन्दः नालः यद्म
यः कः गनः कर्त्तिकः । जंज वृद्धमधुलाय या
यू । जंज वृद्धमधुलाधियगय वृद्धयुता सना
य या यू । जंज सूर्यमधुलाय २ । जंज सूर्यमधु
लाधियगय विष्णुयुता सनाय या यू । जंज सोम

मधुलाय २ । जंज सोममधुलाधियगय वृद्धि
नयुता सनाय या यू । जंज जूग्निमधुलाय २ । जं
ज जूग्निमधुलाधियगय वृद्धयुता सनाय या
यू । जंज गङ्गिमधुलाय २ । जंज गङ्गिमधुला
धियगय सदानि वृद्धयुता सनाय या यू । यं व

युतासनाय २ ॥ वक्रियुतासनाय २ ॥ स्वाहा स्वा
२ ॥ दुष्सासनाय २ ॥ सिद्धसासनाय २ ॥ गवासाना
२ ॥ ध्वनि ॥ उजनीलं यवाननानृत्यमूर्ध्वयर्ध्व
संस्थिता ॥ दिनश्च नवर्षदानीया नत्तसर्वोस्थि
वर्जिता ॥ वक्रिनाशिसितां हा ऊकता हुक्कन

रुद्रव ॥ कदागादाल व्याधुं शुकां चिकटिमुह
स्यवान् ॥ विशुद्धं लं वक्रधजादानवदकवा
रुहि ॥ यालिजातं जायुमालां यष्टकारयंक
कन ॥ अन्यदादुदयासां वक्रवर्मावृत्तविगृ
ह ॥ दवा मृतग्नानवसदवस्थितानव ॥

ॐ श्री लीजनसमय का कृद्विरुधामहादवा ॥ य
दकादाद गजुजास्योस्थितत्र यद्विना ॥ मधु
नालाधनी नोडी डं ड्राकनालकानना ॥ मूसा द
नाम्वकादवी वव्वनाइगिना वूहा ॥ व्यायुवम
मनीधानासिहवमोरुनी अका ॥ दिव्यारुनधर

घांगी जूहा दहागहागिनी ॥ तस्यायीतं जलं व
कुं मरुत्रं गामसं निरुदकि ॥ लोकप्रवर्तुव
यत्सं मखायुदगितं ॥ पूर्ववकुं रुवडकुं मी
गानं रुटिकायमं ॥ सहप्रसूयु संकागं मू
द्ववकुं यनाविगं ॥ सर्वदंड्राकलालोदिव

3299

कायकानिर्गहना। मृदा न त्वा। युवकामि
कृष्टिकायातहनिव। दक्षिणं यथागन
वामं वेति आनं ध। प्रिगुलं वक्रवजालिव
दूर्गमं हिक। दक्षिणं वामं दद्यात्
नीलं तानकं। मूर्धन्यं वमृष्टं खडाक्षं

ASHA ARCHIVES

को... प्रायः कनिष्ठाया वायुः ॥ ॐ नू
कनू... ॥ ॐ श्रयायुयतामुय कनू
नयु... जमुययु... ॐ कौकौ...
यउइवकुयय ॥ ॐ जौयंतयुनूमाययू
ववकुयय ॥ ॐ जौनूजधानायदकिधव

कायय ॥ ॐ जौववामद... वायउरुनव
कायय ॥ ॐ जौय... जातायययिमेन
कायय ॥ ॐ मधानूजौमवौत्यनददया
यनम ॥ ॥ वयुकात... ॥ ॥
...यूजनं ॥ ॥ ॥ जलि ॥ ॥

नादिकमुत्तासर्नज २ ॥ ॐ वृषामनाय २ ॥
 ॐ अघात्रं क्रीं ध्यात्रं क्रीं ध्यात्रं ध्यात्रं न न क्रीं
 सर्वगः सर्वसर्वं क्रीं ह्रीं सः क्रीं नृद नृप क्रीं
 निखानाथ २ ॥ महादेव वायसदा निवाय २
 ॥ ॐ अघात्रं ध्यात्रं क्रीं सहिगाय २ ॥ अघा

नायवलिगृह २ स्वाहा ॥ गायत्री ॥ ॐ निख
 नाथाय विद्महे स्व कन्दाय धीमहि न नान्
 दय प्रचा दमा ॥ ० ॥ जय ॥ ॐ क्रीं स्वाहा ॥ ज
 य समर्थे ॥ ० ॥ गगनं व दार्चन ॥ ॐ आ क
 र ॥ ॐ ह्रीं विष्णु ॥ ॐ नमः ॥ ग रु वाय ॥ ॐ

गगनोपजा ॥ दुर्गपूजा ॥ २

शुं व क य ज्ञा म ह । ॐ या ग नू द ह । । व दार् च न
वि र षो ग त्स र्व वि धि य त्रि यू लु म सु । ० । म
लु त्ता क । ॐ ज वा कू स म र्ग का न्ध यं म ह
यू गिं । त मा त्रिं स र्व पा य द्र्यं य ल मा मि दि वा क
ने । ॐ य स्य ह रु ग दा च कं ग नू जं य स्य बा ह

नै । स म क ना तु कं ल्या र्थ य द्वा ना रा ज ना द
नै । ॐ न म ः नि वा य न्ना क य का नू ल ग रु ग
व । नि व द या चा त्मा नं लुं ग गि य न म ग्ध न
। ॐ शु द्ध ः न्ना क ः नि व य न्ना द य न म ः स र्व
ऋ ः ग क्ती य न ः सा न न्द ः सू त ना य क ः स र

वान्संयुक्तकामप्रदः वागीश्वरप्रदः सः
वारुवयदावासादिचक्रघ्नः ॥ १ ॥ कथाः
धिविना गुरुमुख्यहामृत्युः ॥ २ ॥ यथाहि मां
॥ ३ ॥ ऊं दियुर्वस्त्वमनंस्त्वमसि यपनमं यद्वि
मं कीनमूर्तिः ॥ ४ ॥ ऊं रावंधाटमानं गनगनवि

गनः ॥ ५ ॥ दक्षिणगीवमूर्तिः ॥ ६ ॥ ऊं कीटं चालन
रवीं सकलगिवमयं ऊं नितवः ॥ ७ ॥ ऊं हंस
स्यं चार्द्धनाथं यतनविगनः ॥ ८ ॥ मनुनाजं नमा
मि ॥ ९ ॥ ऊं तिष्ठन्नविस्थो गत्सर्वयनिमूर्ति
मनु ॥ १० ॥ गमुगियनाम ॥ ११ ॥ मधुलस्यय

सूर्यस्य ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ विष्णुर्देवः सर्वभूतहिते रतः ॥
 ॥ जगत्पतिः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नादि वन्दन उपादाहन । • । अलक्षण
न । जैनमः । वन्दना कर्तृनिधाय । जै० अं दूँ
जै० वरुणा देवती जै० । मत्स्य मूढला । आव
मन । जै० अं ऊँ जात्म गन्ताय स्वाहा । जै० अं
ऊँ विद्यागन्ताय । जै० अं दूँ निवेगन्ताय ॥

०॥सूर्योद्योत॥निंअ॥श्रीकूलमारुह
महादेववायुका॥३॥नकिमहिमाय
०॥दमर्द॥गृहालखाहा॥०॥यूजन॥ॐ
जर्विगंसर्वकार्योद्यो॥कूलमारुह॥देव
वानोमिप्रकाश॥नकि॥३॥उकिमकि

रुलपद॥यर्षाव॥०॥गुनमधुलसूजा
॥निंअ॥श्रीगुन्यादक॥खानम॥॥ॐ॥अखे
मधुलाकाल्याक॥यनचनान्नन॥तत्यद
निग॥यनतस्मि॥श्रीगुनव॥नम॥॥मधुस्य
युषानिनधरुवा॥०॥तग॥मधुलासन॥

ॐ अयमसनाययायू । वलिम ॥ ॐ अयमस
नाययायू । याउ ॥ ॐ अकूमोमनाययायू ॥ स्वसास
लाह न ॥ ॐ अकिनिश्चि च्चकां कनाये ऊ ॥
अमुय रुट । ० ॥ स्वयनसिकापलिख ॥
ॐ अ नं हं रुत्यय ऊ य ऊ लखा हा ॥ वरुम

रुट मूडन ॥ ० ॥ दनवाय नूधन ॥ ॐ अ व
लम कुल कुलम व ल जी हं रु त्या हा ॥ ० ॥ ग
मन्या स ॥ रुमा अलि ॥ ॐ अ मू स्या ग्री कृ डि
का डा रिं ला क नी वि घा या अ धा न रे न व मृ मि
वि ना ट् रु च्च ॥ ग्री कृ डि का द व गा अ वी ऊ ॥

कीर्णकि ४ श्रीकीलकं सर्वार्थसाधनविनि
यागः ॥ ॐ जघानमृषयः २ ॥ मृद्धि ॥ ॐ वि
नाटकन्दसः २ ॥ मूख ॥ ॐ श्रीकृदिकाये २
॥ ॐ श्रीं वीजयः ॥ ॐ गुह्य ॥ ॐ श्रीं नक्यः २ ॥
मा २ ॥ दया ४ ॥ व्यायकं मूलन ॥ कर्माजलि ॥
॥ १ श्रीकीलकायः २ ॥

ॐ सर्वार्थसाधनविनियोगः ॥ ० ॥ गन्धर्व्य
र्यां कनकाधनं ॥ ॐ श्रीं किनिश्विकाकना
ये ४ ॥ जघानमृषयः २ ॥ ॐ श्रीं नमो गवगदक
मलाये ४ ॥ श्रीं जघानमृषयः २ ॥ ॐ श्रीं कृ
दिकाये ४ ॥ श्रीं गङ्गा नीलाखाहा ॥ ॐ श्रीं

ॐ शिव नलिखदं श्रीमध्यामायां वषट्
ॐ श्या नज्या न ज्यानाम्खी वहु न्या
ये ॐ श्रीजनानिकाया हूँ ॥ ॐ श्रीं श्रीं मे
हनामिकाये ॐ कनिष्ठ्यां वोमट् ॥ ॐ
किं विश्विष्टका हूँ नाये ॐ कनकनयट्

ॐ अमुह्यां यरुट् ॥ ॐ नमो रगननिधि
ॐ वक्राय श्यायू ॥ ॐ श्रीं कृष्णिकाये
ॐ पूर्ववक्राय श्यायू ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं
वनशिवदक्षिणवक्राय श्यायू ॥ ॐ
श्या नज्या नज्या नाम्खी उरु नवकु

२ यायू ॥ जैँ ऊँ कौं कौं महानात्रिकाये श्री
यः धर्ममेव काय २ यायू ॥ जैँ ऊँ किलि २
विश्वकाङ्क्षनाये श्री यनायत्रवकाय २ या
यू ॥ अवंददयादि ॥ ० ॥ जलयागयूज
न ॥ जैँ ऊँ हं २ जलयागसनाय २ यायू ॥

नमत्रिगिमनुषजलनिक्षय ॥ जैँ वन्द
नादिक्रिय ॥ ० ॥ यवयुषवनयूजन
हकानकूगन ॥ जौं हदयादि ॥ वन्द
नाकूगयूया २ ॥ धनमूडागानययदि
गन्धन ॥ जूयायूजन ॥ पूर्वकमल ॥

गायत्रीमनुवात्मादिन्याः कथं॥ • जूंज
कृद्धि कार्ये विग्रहं कृत्स्नीया यथा मदि न
नरु कृत्स्नीया दद्यात्॥ • गायत्र्योक्तम्
धर्मं चन्दनं । जूंज जूंजी सः मानरुनीजी
वयामि २॥३॥ नैवेद्यं देना

जेऊं अमृतायै नि नमः ॥ ३ ॥ सिंहल ॥ जेऊं अमृत
 अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ जेऊं अमृत ॥ अमृत ॥ अमृत ॥
 अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥
 अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥
 अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥
 अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥ अमृत ॥ ३ ॥

नमो दिवा २॥ सख प्रिया दय काल्य ॥ रु
ह ॥ मधुल निधाय पूजय ॥ ॐ अं मूयै म
धुल य २॥ जल नायू ॥ ॐ कौ वनू ॥ द
वी २॥ ॐ वन्दना कतयू ॥ ॐ यून
ॐ ॐ साम मधुलाय २॥ मूक मूक मूक

धवाहन ॥ ॐ कौगंग वज मूनति ॥ धनू
मूजा ॥ ॐ जय ॥ ॐ हृदयादि ॥ वन्दना
कत निधाय ॥ वं धनू सः सख मूजा ॥ त
नययदि ग्वन्धन ॥ दवात्मा पूजाय कनक्षि
नसूक ॥ कल गमीना ॥ ० ॥ मीर्थनेव्यय

रत्नधनं । ॥ तत्ताशीयागस्थापनाहमो
जस्तुमनुलाय ॥ र्त्तय ॥ जिंउं जावन
गस्तुदिस्था ॥ ॥ जस्तुमनुगिग्यादिका
यकाल ॥ यूजन ॥ ॐ मवद्विमशुलाय ॥
यागयकाल ॥ रुट् ॥ यूजन ॥ ॐ जंउं जंऊं

मशुलाय ॥ ॥ जस्तुमनुयूनय ॥ जिंउं जा
स्तुमनुयूनय ॥ ॥ यागयविग
कन ॥ २० ॥ यूजन ॥ ॥ ॐ उं मा
मशुला ॥ ॥ य ॥ जिंउं गं ॥ ॥ पूं पूं पूं यन
तस्था ॥ ॥ जिंउं जंउं जंऊं जंऊं ॥ ॥ रुट् न ॥ ॥

